

पर प्रतिबंध लगाए जाने के कई कारण हैं - जैसे कीट व्याधियों में इन रसायनों के लिए प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न होना, इनके प्राकृतिक शत्रुओं का नष्ट होना आदि।

प्रतिबंध व हमारा दायित्व

कृषि रसायनों और उनके खतरों को देखते हुए प्राकृतिक खेती एवं कीट-व्याधियों के लिए समेकित प्रबंधन व्यवस्था अपनाना जरूरी हो गया है। कृषि रसायनों के उपयोग को शून्य तक ले जाना सम्भव नहीं है लेकिन इनके उपयोग को कम किया जा सकता है। समेकित प्रबंधन व्यवस्था में प्राकृतिक उपायों, यांत्रिक क्रियाओं, जैविक कारकों इत्यादि को ऐसे अनुपात में जोड़ा जाता है कि कृषि रसायनों से होने वाली जनहानि को न्यूनतम बिन्दु तक लाया जा सके। समेकित प्रबंधन व्यवस्था को आज प्रत्येक गांव, प्रत्येक किसान तक ले जाना अनिवार्य हो गया है जिससे कृषि रसायनों से उत्पन्न दुविधा को शीघ्र समाप्त किया जा सके।

यह भी आवश्यक है कि हम एक ही रसायन के लगातार उपयोग को निरुत्साहित करें, प्रत्येक कीट-व्याधि के लिए अदल-बदल कर रसायनों का प्रयोग करें और विविध मोर्चों से इनके विरुद्ध प्रहार करें। साथ ही हमें ऐसे रसायनों की आवश्यकता है जो विषैले केवल लक्ष्य जीव के लिए हों।
(स्रोत फीचर्स)



प्लास्टिक से आई जीवों पर शामत

महासागरों में बह रही प्लास्टिक की छोटी-छोटी गोलियां दुनिया भर के समुद्री जीवों को विषाक्त कर रही हैं। जापानी शोधकर्ताओं ने पाया है कि ये गोलियां समुद्री पानी से विषाक्त रसायनों को सोख लेती हैं और समुद्री जीवों के इन्हें ग्रहण करने के साथ ही खाद्य-शृंखला में इनका प्रवेश हो जाता है।

रासायनिक कम्पनियां अक्सर नहीं गोलियों के रूप में बहुलकों का उत्पादन करती हैं। और कुछ ही मि.मी. त्रिज्या वाली इन गोलियों को समुद्री जहाजों द्वारा उत्पादकों तक पहुंचाया जाता है ताकि इन्हें पिघलाकर प्लास्टिक के पदार्थ बनाए जा सकें। लेकिन कारखानों और शहरों से निकासित पानी और समुद्र किनारे माल छोड़ने वाले जहाजों के कारण हजारों टन गोलियां समुद्रों में जा मिलती हैं। 1992 में यू.एस. पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि अमरीकी तटों के बंदरगाहों में प्लास्टिक के कण तमाम मानव जनित कचरे का लगभग 94 प्रतिशत हैं।

जापानी शोधकर्ताओं ने अभी हाल ही में इन कणों के विषाक्त होने की बात को पुष्ट किया है।

टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड टेक्नॉलॉजी के हिडशिग तकावा और उनके सहयोगियों ने जापानी तटों से पॉलीप्रोपायलीन कणों को इकट्ठा किया और उनका विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि इन कणों ने दो किस्म के रसायनों को सोखा था - पॉलीक्लोरीनेटेड बाईफेनाइल (पीसीबी) और डीडीई (डीडीटी सरीखा एक रसायन)। इन कणों में उपरोक्त रसायनों का घनत्व आसपास के पानी से लाखों गुना ज्यादा था।

ये रसायन जानवरों में प्रतिरोधक क्षमता और प्रजनन क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। इन कणों में नॉनाइल फिनॉल नामक एक अन्य रसायन भी पाया गया। टोक्यो की खाड़ी के अवसाद में इस रसायन के घनत्व से इन कणों में इसका घनत्व 100 गुना से भी ज्यादा पाया गया है। गौरतलब है कि यह रसायन जीवों के हॉर्मोन तंत्र को प्रभावित करता है।

यह पुष्ट करने के लिए कि ये कण रसायनों को सोख रहे हैं शोधकर्ताओं ने प्रदूषणरहित कणों को एक पिंजरे में बन्द कर 6 दिनों तक समुद्र के पानी में डुबाए रखा। उन्होंने पाया कि इन कणों ने उपरोक्त दोनों रसायनों को समुद्र के पानी से सोख लिया था और इनका घनत्व दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था।

इस सब के मद्देनजर वन्य जीवों पर इन कणों का प्रभाव अत्यधिक हो सकता है। समुद्री पक्षियों, मछलियों और कछुओं को ये कण मछलियों के अण्डे और उनके अन्य खाद्य पदार्थों जैसे लगते हैं जिन्हें वे सामान्य तौर पर खाते हैं। उत्तर-पश्चिम प्रशांत महासागर में चिड़िया के लगभग हरेक नमूने में प्लास्टिक पाया गया। यू.एस. उत्पादकों ने तो निकासित होने वाले पानी की सफाई शुरू कर दी है। लेकिन समस्या तो फिर भी बरकरार है। इन अध्ययनों में केवल रेजिन कणों पर ध्यान केन्द्रित किया गया था। तकावा का कहना है कि अन्य प्लास्टिक अपशिष्ट भी इन रसायनों को सोख सकते हैं। यानी समुद्री जीवों के लिए और बढ़ा खतरा। (स्रोत फीचर्स)